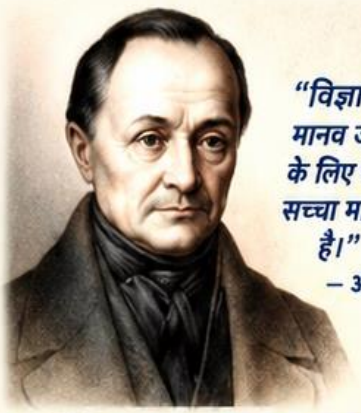

"विज्ञान मानव जीवन के लिए एकमात्र सच्चा मार्गदर्शक है।"
– ऑगस्त कॉम्ट

ऑगस्त कॉम्ट
प्रत्यक्षवाद
समाजशास्त्र के जनक

अवलोकन • विश्लेषण • नियमों की खोज • बेहतर समाज का निर्माण

मुख्य तथ्य

पूरा नाम	:	ऑगस्त कॉम्ट
जन्म	:	19 जनवरी 1798 (मॉंतेपेलियर, फ्रांस)
निधन	:	5 सितम्बर 1857 (पेरिस, फ्रांस)
प्रसिद्ध रूप में	:	समाजशास्त्र के जनक
मुख्य कृति	:	प्रत्यक्षवाद (1830–1842)
दृष्टिकोण	:	वैज्ञानिक, अनुभवात्मक, तार्किक

महत्वपूर्ण सिद्धांत एवं अवधारणाएं

1 प्रत्यक्षवाद – मूल विचार

- केवल बैज्ञानिक विधि ही सच्चे ज्ञान दे सकती है।
- यह तत्वमीमांसा, धर्मशास्त्र और अटकलों को अस्वीकार करता है।
- अवलोकन, प्रयोग और तार्किक तर्क पर आधारित है।
- समाज के अध्ययन में बैज्ञानिक विधि को लागू किया (सामाजिक भौतिकी)।

"समाजशास्त्र समाज का विज्ञान है, ठीक वैसे ही जैसे भौतिकी भौतिक जगत का विज्ञान है।"
– ऑगस्त कॉम्ट

2 तीन अवस्थाओं का नियम

मानव विचार और सामाजिक विकास तीन अवस्थाओं से होकर प्रगति करता है:

धार्मिक अवस्था (अतिप्राकृतिक स्पष्टीकरण)	→	तत्वमीमांसात्मक अवस्था (अमूर्त स्पष्टीकरण)	→	प्रत्यक्षवादी अवस्था (वैज्ञानिक (स्पष्टीकरण)
ईश्वर और आत्माएँ विश्व की व्याख्या करती है।		दर्शन और अमूर्त विचार विश्व की व्याख्या करते है।		अवलोकन, तर्क और विज्ञान विश्व की व्याख्या करते हैं।

अनिश्चितता से → निश्चितता की ओर प्रगति

3 विज्ञानों का पदानुक्रम

कॉम्ट ने विज्ञानों को सरल से जटिल, सामान्य से विशेष क्रम में व्यवस्थित किया।

4 सामाजिक स्थैतिकी एवं सामाजिक गतिकी

सामाजिक स्थैतिकी (समाज की संरचना)
- सामाजिक व्यवस्था, सामंजस्य और स्थिरता का अध्ययन।
- संस्थाओं की जॉच (जैसे – परिवार, धर्म, राज्य, संपत्ति)।
- समाज में स्थिरता सुनिश्चित करना।

व्यवस्था → स्थिरता

सामाजिक गतिकी (समाज में परिवर्तन)
- सामाजिक प्रगति और विकास का अध्ययन।
- परिवर्तन को प्रेरित करने वाले कारकों पर ध्यान।
- इसमें संघर्ष, नवाचार और समायोजन शामिल हैं।

परिवर्तन → प्रगति

5 प्रगति का सिद्धांत

- समाज अधिक जटिल, सुव्यवस्थित और अधिक युक्तिसंगत बनता है।
- विज्ञान, शिक्षा और नैतिक सुधारों के माध्यम से प्रगति संभव है।
- अंतिम लक्ष्य – 'महानतम मानव समाज' (तर्क और परोपकार पर आधारित एकीकृत समाज)।

व्यक्तिवाद से परार्थवाद की ओर

6 मानवता का धर्म

- कॉम्ट ने मानवतावाद पर आधारित एक नया धर्म प्रस्तावित किया, जो पारंपरिक धर्मों का स्थान ले सके।
- इसमें 'महान सता' (समस्त मानवता) की पूजा पर जोर दिया गया।
- सामाजिक सेवा, नैतिक मूल्य, सामाजिक एकता और समाज की सेवा पर बल।

मानवता पूजा का विषय है

"मानवता का धर्म ही एकमात्र सच्चा धर्म है।"
– ऑगस्त कॉम्ट

7 समाजशास्त्र – सामाजिक भौतिकी

- 1838 में 'समाजशास्त्र' शब्द का प्रतिपादन कॉम्ट ने किया।
- यह सामाजिक घटनाओं के नियमों के अध्ययन का विषय है।
- जैसे प्राकृतिक विज्ञानों में अवलोकन, तुलना और प्रयोग आवश्यक हैं, वैसे ही समाजशास्त्र में भी।
- उद्देश्य – सामाजिक व्यवस्था और प्रगति लाना।

"समाजशास्त्र सामाजिक घटनाओं का वैसा ही अध्ययन है, जैसा खगोलशास्त्र आकाशीय घटनाओं का।"
– ऑगस्त कॉम्ट

महत्वपूर्ण पुस्तकें

1. प्रत्यक्षवादी दर्शन का पाठयक्रम (1830–1842) – 6 खंड (मुख्य कृति)
2. प्रत्यक्षवादी राजनीति प्रणाली (1851–1854)
3. प्रत्यक्षवादी परमतत्वमीमांसा (1853)
4. प्रत्यक्षवाद (अंग्रेजी संस्करण)
5. द प्रेट बीईगु (मरणोपरांत)

एक नज़र में सार

अवलोकन और विज्ञान → तीन अवस्थाओं का नियम → सामाजिक स्थैतिकी एवं गतिकी → प्रगति और मानवता → बेहतर समाज

विज्ञान → तर्क → नैतिक सुधार → सामाजिक प्रगति

अधिक अध्ययन करें • उच्च अंक प्राप्त करें

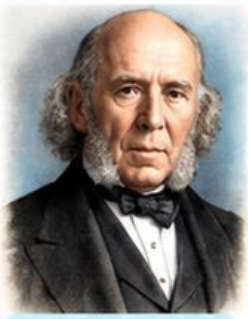

हर्बर्ट स्पेन्सर
(1820–1903)

लुईस हेनरी मॉर्गन
(1818–1881)

उत्क्रान्तिवाद

हर्बर्ट स्पेन्सर और लुईस हेनरी मॉर्गन

प्रगति • अनुकूलन • सामाजिक उत्क्रान्ति

मुख्य तथ्य

	हर्बर्ट स्पेन्सर	लुईस हेनरी मॉर्गन
जन्म	1820 (इंग्लैंड)	1818 (अमेरिका)
निधन	1903 (इंग्लैंड)	1881 (अमेरिका)
प्रसिद्ध रूप में	"सामाजिक उत्क्रान्तिवाद के जनक"	"सांस्कृतिक उत्क्रान्ति के जनक"
मुख्य कृति	समाजशास्त्र के सिद्धांत (1851)	प्राचीन समाज (1877)
दृष्टिकोण	जैविक उपमाओं पर आधारित कार्यात्मकतावादी	ऐतिहासिक-तुलनात्मक मानवशास्त्रीय

महत्वपूर्ण सिद्धांत और अवधारणाएं

हर्बर्ट स्पेन्सर

सामाजिक उत्क्रान्ति एक प्राकृतिक और अनिवार्य प्रक्रिया है

1 उत्क्रान्तिवादी सिद्धांत

- समाज सरल से जटिल की ओर विकसित होता है, समरूप (समान) से विषम (विभिन्न) की ओर।
- प्रगति क्रमिक, सतत और एकरेखीय (एक दिशा में) है।
- यह "योग्यतम की उत्तरजीविता" (जो समाज पर लागू होता है) के सिद्धांत द्वारा संचालित है।

"योग्यतम की उत्तरजीविता मानव प्रगति का नियम है।"
– हर्बर्ट स्पेन्सर

2 सामाजिक संगठन

- समाज एक जीवित जीव के समान है।
- इसके विभिन्न संस्थान स्थिरता और उत्तरजीविता के लिए मिलकर कार्य करते हैं।
- जैविक जीवों की तरह, समाज भी वृद्धि, विभेदीकरण और एकीकरण से गुजरते हैं।

समाज (एक जीवित जीव)
संरचना → कार्य → उत्क्रान्ति

3 समाज की उत्क्रान्ति के चरण

सैन्य समाज (बल-आधारित) → **औद्योगिक समाज** (अनुबंध-आधारित) → **पूर्ण विकसित समाज** (स्वैच्छिक)

जबरदस्ती और युद्ध | कानून और उद्योग | सहयोग और स्वतंत्रता

4 मुख्य अवधारणाएँ

- **विभेदीकरण** – जटिलता में वृद्धि।
- **एकीकरण** – परस्पर निर्भरता का विकास।
- **प्रगति** – सैन्य समाज से औद्योगिक और फिर स्वैच्छिक समाज की ओर।
- **सामाजिक स्थैतिकी** – समाज की संरचना का अध्ययन।
- **सामाजिक गतिकी** – परिवर्तन (उत्क्रान्ति) का अध्ययन।

सरल से → जटिल

लुईस हेनरी मॉर्गन

सांस्कृतिक उत्क्रान्ति एक सार्वभौमिक क्रम का अनुसरण करती है

1 सांस्कृतिक उत्क्रान्ति के चरण

मॉर्गन ने 3-चरणीय योजना प्रस्तुत की (बाद में इसे 4 चरणों तक विस्तारित किया गया)

आदिम अवस्था (प्रथम चरण) → **बर्बर अवस्था** (द्वितीय चरण) → **सभ्य अवस्था** (तृतीय चरण)

भोजन संग्रह, आग का उपयोग, न परिवार, न संपत्ति | मृदभांड निर्माण, कृषि, धातु का उपयोग, पशुपालन, मानव बस्ती | लेखन, राज्य, कानून, उन्नत संस्थाएँ

(बाद में जोड़ा गया)

4. उत्तर-सभ्यता अवस्था (वैकल्पिक)
भविष्य की अवस्था – उन्नत प्रौद्योगिकी और औद्योगिक विकास पर आधारित

2 उत्क्रान्ति का आधार

- प्रौद्योगिकीय प्रगति (औज़ार, आग, कृषि, धातुकर्म)।
- परिवार और कुटुम्ब व्यवस्था में परिवर्तन (मातृवंश से पितृवंश की ओर)।
- संपत्ति, राज्य और कानून का विकास।
- सांस्कृतिक प्रसार और आविष्कार।

सरल औजार → उन्नत संस्कृति

3 महत्व

- तुलनात्मक मानवशास्त्र की पद्धति का परिचय दिया।
- कुटुम्ब व्यवस्था के उत्क्रान्ति का स्पष्टीकरण दिया (जैसे मातृवंशीय से पितृवंशीय)।
- सांस्कृतिक परिवर्तन में प्रौद्योगिकी की भूमिका को दर्शाया।
- आदिम समाजों के अध्ययन की नींव रखी।

"मानव समाज का विकास परिवार के विकास का इतिहास है।"
– लुईस हेनरी मॉर्गन

एक नज़र में तुलना

पहलू	हर्बर्ट स्पेन्सर	लुईस हेनरी मॉर्गन
केंद्र बिंदु	सामाजिक उत्क्रान्ति का सामान्य सिद्धांत	सांस्कृतिक और कुटुम्बीय उत्क्रान्ति
प्रेरक शक्ति	योग्यतम की उत्तरजीविता	प्रौद्योगिकीय प्रगति और आविष्कार
चरण	सैन्य → औद्योगिक → स्वैच्छिक	आदिम → बर्बर → सभ्य (+ उत्तर-सभ्यता)
उपमा	जैविक जीव	सांस्कृतिक/प्रौद्योगिकीय विकास
प्रकृति	एकरेखीय (एक दिशा में)	अनुक्रमिक (3/4 चरण)
मुख्य योगदान	सामाजिक संगठन, कार्यात्मकता, "योग्यतम की उत्तरजीविता"	कुटुम्ब व्यवस्था, सांस्कृतिक उत्क्रान्ति, मानवशास्त्रीय पद्धति

उत्क्रान्ति की सीढ़ी
(संयुक्त दृष्टिकोण)

- सभ्यता (उन्नत संस्कृति)
- बर्बर अवस्था (कृषि, धातु)
- आदिम अवस्था (भोजन संग्रह)
- प्रारंभिक अवस्था (सरल जीवन)

सरल जैविक रूपों से जटिल सांस्कृतिक समाजों तक

महत्वपूर्ण पुस्तकें

हर्बर्ट स्पेन्सर
1. समाजशास्त्र के सिद्धांत (1851)
2. समाजशास्त्र के सिद्धांतों की रूपरेखा (1876–1896)
3. समाज का उत्क्रान्ति (1896)

लुईस हेनरी मॉर्गन
1. प्राचीन समाज (1877)
2. कुटुम्ब व्यवस्था के लीग (संस्थाएँ) (1881)
3. संगोष्ठात्मक समाजों की प्रणालियों और संलग्नता (1871)

समाज के विकास को समझने के लिए अध्ययन करें!

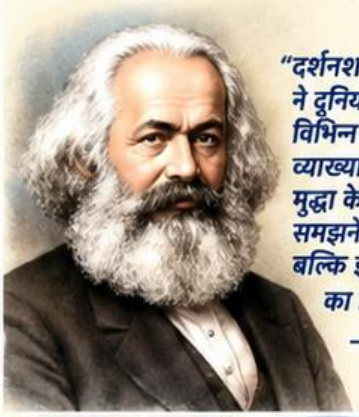

"दर्शनशास्त्रियों ने दुनिया की विभिन्न तरीकों से व्याख्या की है; मुद्दा केवल इसे समझने का नहीं, बल्कि इसे बदलने का है।"
– कार्ल मार्क्स

ऐतिहासिक समाजशास्त्र

कार्ल मार्क्स

वर्ग, संघर्ष और सामाजिक परिवर्तन

इतिहास • भौतिकवाद • वर्ग संघर्ष • सामाजिक रूपांतरण

मुख्य तथ्य

पूरा नाम	:	कार्ल हेनरिख मार्क्स
जन्म	:	5 मई 1818 (ट्रायर, जर्मनी)
निधन	:	14 मार्च 1883 (लंदन, यूके)
प्रसिद्ध रूप में	:	ऐतिहासिक भौतिकवाद के जनक
मुख्य कृति	:	Das Kapital (1867)
दृष्टिकोण	:	द्वंद्वात्मक एवं ऐतिहासिक भौतिकवाद

महत्वपूर्ण सिद्धांत एवं अवधारणाएं

1 ऐतिहासिक भौतिकवाद

समाज का विकास जीवन की भौतिक परिस्थितियों और विचारों के आधार पर होता है।

उत्पादन की शक्तियाँ (प्रौद्योगिकी, श्रम, औजार) → **उत्पादन संबंध** (वर्ग संबंध, संपत्ति संबंध) → **सामाजिक रचना** (उत्पादन की पद्धति, वर्ग संरचना, अधिरचना)

आर्थिक आधार सामाजिक, राजनीतिक, कानूनी और वैचारिक अधिरचना को निर्धारित करता है।

2 उत्पादन की पद्धति

एक विशिष्ट तरीका, जिसके माध्यम से समाज अपने भौतिक जीवन का उत्पादन करता है।

उत्पादन की शक्तियाँ (प्रौद्योगिकी + श्रम) → **उत्पादन संबंध** (वर्ग संबंध) → **उत्पादन की पद्धति**

मुख्य प्रकार:
• आदिम • दास प्रथा • सामंतवाद • पूँजीवाद • समाजवाद (साम्यवाद – भविष्य)

3 वर्ग संघर्ष

अब तक के सभी विद्यमान समाजों का इतिहास वर्ग संघर्षों का इतिहास है।

बुर्जुआ वर्ग (उत्पादन के साधनों का मालिक – पूँजीपति) ⟷ **वर्ग संघर्ष** ⟷ **सर्वहारा वर्ग** (अपनी श्रम-शक्ति बेचने वाला – श्रमिक वर्ग)

सामाजिक परिवर्तन की ओर ले जाता है

सामंतवाद → पूँजीवाद → समाजवाद (साम्यवाद)

4 अधिशेष मूल्य

पूँजीवादी श्रमिकों को उनके द्वारा पैदा किए गए मूल्य से कम भुगतान करके लाभ कमाते हैं।

श्रम-शक्ति (= मजदूरी) → **अधिक मूल्य का सृजन** (लागत से अधिक) → **अधिशेष मूल्य** (पूँजीपति द्वारा हड़प लिया जाता है)

यह लाभ का स्रोत, पूँजी संचय और शोषण का आधार है।

5 विमुखीकरण (अलगाव)

पूँजीवाद के अंतर्गत श्रमिक निम्न से विमुख हो जाता है:

1. **अपने श्रम के उत्पाद से** (जो वह बनाता है, वह उसका नहीं रहता)
2. **अपनी श्रम-प्रक्रिया से** (कार्य उसके लिए बाध्यता बन जाता है)
3. **अपनी मानव प्रकृति से** (अपनी स्वाभाविक सर्जनात्मकता से दूर)
4. **अन्य मनुष्यों से** (अलगाव, समुदाय का ह्रास)

मनुष्य एक वस्तु (कमोडिटी) में बदल जाता है।

6 विचारधारा

समाज में प्रचलित विचार, मूल्य और विश्वास भौतिक परिस्थितियों द्वारा आकारित होते हैं।

शासक वर्ग (नियंत्रित करता है) ↓ **विचारधारा** (शिक्षा, मीडिया, धर्म, संस्कृति के माध्यम से) ↓ **वर्ग प्रभुत्व को बनाए रखता है**

"धर्म जनता की **अफीम** है" – जनता को शांत रखने वाली वह विचारधारा जो पीड़ित जनसमूहों को सांत्वना देती है।

7 राज्य और सत्ता

राज्य वर्ग शासन का एक उपकरण है।

- **सामंतवाद में** – यह सामंती प्रभुओं की सेवा करता है।
- **पूँजीवाद में** – यह बुर्जुआ वर्ग की सेवा करता है (शासक वर्ग)।
- **समाजवाद में** – यह श्रमिक वर्ग के लिए कार्य करता है (अंततः राज्य का लोप हो जाता है)।

"राज्य एक तटस्थ शरीर नहीं है, बल्कि यह वर्ग प्रभुत्व का उपकरण है।"
– कार्ल मार्क्स

8 सामाजिक परिवर्तन की गतिशीलता

परिवर्तन विरोधाभासों और संघर्षों से उत्पन्न होता है।

तनाव (विरोधाभास) → **संघर्ष** (वर्ग संघर्ष) → **क्रांति** (रूपांतरण) → **नई व्यवस्था** (उच्चतर अवस्था)

द्वंद्वात्मक प्रक्रिया:
हर अवस्था अपने विपरीत को जन्म देती है → परिवर्तन की ओर ले जाती है।

मात्र से गुणवत्ता की ओर

क्रमिक परिवर्तन (मात्रात्मक) → क्रांतिकारी परिवर्तन (गुणात्मक)

महत्वपूर्ण पुस्तकें

1. Das Kapital (1867) – खंड I (राजनीतिक अर्थशास्त्र)
2. The Communist Manifesto (1848) (अंग्रेजी संस्करण)
3. The German Ideology (1845–46) (अंग्रेजी संस्करण)
4. Grundrisse (1857–58) (आर्थिक पांडुलिपियाँ)
5. A Contribution to the Critique of Political Economy (1859) (अंग्रेजी संस्करण)

BPSC TRE 4.0 के लिए मुख्य निष्कर्ष

- मार्क्स का ऐतिहासिक समाजशास्त्र भौतिक परिस्थितियों और वर्ग संघर्ष के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन की व्याख्या करता है।
- उनकी अवधारणाएँ – ऐतिहासिक भौतिकवाद, उत्पादन की पद्धति, अधिशेष मूल्य, विमुखीकरण और विचारधारा – वर्ग संरचना और सामाजिक रूपांतरण को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।
- यह दृष्टिकोण हमें पूँजीवाद, राज्य, धर्म, असमानता और सामाजिक आंदोलनों का आलोचनात्मक विश्लेषण करने में सहायता देता है।
- BPSC TRE में औद्योगिक समाज, वर्ग, असमानता और सामाजिक परिवर्तन से जुड़े प्रश्नों के लिए महत्वपूर्ण।

दुनिया के मजदूरों, एक हो!

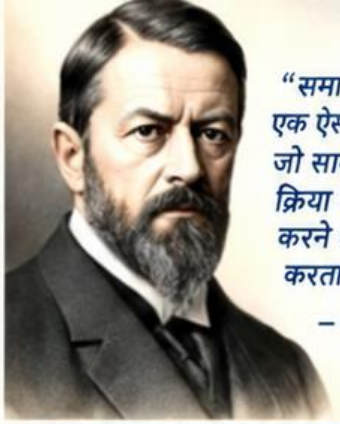

"समाजशास्त्र एक ऐसा विज्ञान है जो सामाजिक क्रिया की व्याख्या करने का प्रयास करता है।"
– मैक्स वेबर

मैक्स वेबर

ऐतिहासिक समाजशास्त्र

व्याख्यात्मक समाजशास्त्र

सामाजिक क्रिया के अर्थ को समझना

व्याख्या • विश्लेषण • स्पष्ट करना • समझना • अधिक अर्थपूर्ण समाज का निर्माण

मुख्य तथ्य

- **पूर्ण नाम :** मैक्सिमिलियन कार्ल एमिल वेबर
- **जन्म :** 21 अप्रैल 1864 (एरफ़ुर्ट, जर्मनी)
- **निधन :** 14 जून 1920 (म्यूनिख, जर्मनी)
- **प्रसिद्ध हैं :** समाजशास्त्र के संस्थापकों में से एक
- **प्रमुख कृतियाँ :** प्रोटेस्टेंट नैतिकता और पूँजीवाद की भावना
- **दृष्टिकोण :** व्याख्यात्मक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक, मूल्य-निरपेक्ष

महत्वपूर्ण सिद्धांत एवं अवधारणाएँ

1 सामाजिक क्रिया – केंद्रीय विचार

- समाजशास्त्र का उद्देश्य मानव क्रिया के पीछे के अर्थ को समझना (Verstehen) है।
- सामाजिक क्रिया वह क्रिया है जिसमें कर्ता दूसरों के व्यवहार की ओर उन्मुख होता है।
- यह केवल बाहरी व्यवहार नहीं, बल्कि उस व्यक्तिपरक अर्थ को भी शामिल करता है जो कर्ता देता है।
- समाजशास्त्र को सामाजिक क्रिया के अर्थ की व्याख्या करनी चाहिए।

"सामाजिक क्रिया को समझना, उन व्यक्तिपरक अर्थों को समझना है जो कर्ता अपनी क्रिया से जोड़ता है।"
– मैक्स वेबर

2 सामाजिक क्रिया के प्रकार

वेबर ने सामाजिक क्रिया को चार आदर्श (आदर्श) प्रकारों में विभाजित किया:

पारंपरिक क्रिया	भावनात्मक क्रिया	मूल्य-तर्कसंगत क्रिया	उपयोगितावादी (डइेश्य-तर्कसंगत) क्रिया
परंपरा और रूढ़ि पर आधारित	भावनाओं और मन:स्थितियों पर आधारित	किसी मूल्य या नैतिक विश्वास में आस्था पर आधारित	किसी विशेष उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए साधनों की तर्कसंगत गणना पर आधारित
उदाहरण: पारिवारिक उत्तराधिकार, परंपराएँ	उदाहरण: प्रेम, क्रोध, उत्साह	उदाहरण: धार्मिक आस्था से व्यवहार	उदाहरण: आर्थिक निर्णय, योजना

पारंपरिक समाज → तर्कसंगठितता की ओर → आधुनिक समाज

3 आदर्श प्रकार

- एक पद्धतिगत उपकरण, जिससे सामाजिक यथार्थ का विश्लेषण किया जाता है।
- यह वास्तविकता नहीं, बल्कि विश्लेषणात्मक निर्माण है जो जटिल सामाजिक घटनाओं को समझने में मदद करता है।
- यह समाजशास्त्रीय घटना की तुलना एवं समझने में सहायक है।

आदर्श प्रकार वास्तविकता की एक सरल प्रतिकृति नहीं है, बल्कि उसे समझने का एक उपकरण है।

4 नौकरशाही – तर्कसंगत-वैधानिक अधिकार

- आधुनिक समाज में नौकरशाही को सबसे कुशल एवं तर्कसंगत संगठनात्मक रूप माना।
- यह नियम-आधारित और औपचारिक संरचना पर आधारित होती है।
- **प्रमुख विशेषताएँ:**
  - स्पष्ट आधिकारिक नियम और विनियम
  - पदक्रमित संरचना (श्रेणीबद्ध अधिकार)
  - श्रम विभाजन
  - लिखित अभिलेख और दस्तावेज़
  - निरपेक्षता
  - तकनीकी योग्यता के आधार पर चयन
  - व्यक्तिनिरपेक्षता और दक्षता

"नौकरशाही तर्कसंगतता का सबसे शुद्ध रूप है।"
– मैक्स वेबर

5 अधिकार – तीन प्रकार

वेबर ने वैध (वैध) अधिकार के तीन प्रकार बताए:

परंपरागत अधिकार
- परंपरा और रूढ़ि पर आधारित
- उदाहरण: राजतंत्र, वंशागुगत नियम

करिश्माई अधिकार
- किसी असाधारण व्यक्ति के व्यक्तिगत गुणों पर आधारित
- उदाहरण: धार्मिक नेता, क्रांतिकारी, असाधारण व्यक्तित्व

तर्कसंगत-वैधानिक अधिकार
- नियमों, कानूनों और औपचारिक प्रक्रियाओं पर आधारित
- उदाहरण: आधुनिक राज्य, नौकरशाही

6 प्रोटेस्टेंट नैतिकता और पूंजीवाद की भावना

- आधुनिक पूंजीवाद के उदय में प्रोटेस्टेंट नैतिकता की भूमिका की व्याख्या की (विशेषकर कैल्विनवाद)।
- दिखाया कि धार्मिक विचारों ने पूंजीवादी भावना (अर्थशास्त्रीय मानसिकता) के विकास को कैसे प्रभावित किया।
- **प्रमुख विचार:**

पूर्वनियत (मोक्ष की पूर्वनिर्धारितता) → कठोर परिश्रम एक धार्मिक कर्तव्य के रूप में → सांसारिक सफलता ईश्वरीय कृपा का संकेत → पूंजी का तर्कसंगत संचय

"प्रोटेस्टेंट नैतिकता ने पूंजीवाद की भावना के उदय के लिए सांस्कृतिक आधार प्रदान किया।"
– मैक्स वेबर

7 तर्कसंगठितता और आधुनिकता

- आधुनिक समाज तर्कसंगठितता, दक्षता, गणनात्मकता और नियंत्रण की विशेषता से पहचाना जाता है।
- यह "दुनिया के मोहभंग" (Entzauberung) की ओर ले जाता है – धर्म, जादू और पारंपरिक मूल्यों का क्षय।
- परिणामस्वरूप एक "लोहे के पिंजरे" का निर्माण होता है – अत्यधिक नियमबद्धता और नियंत्रण।

"तर्कसंगठितता एक लोहे के पिंजरें में बदल सकती है।"
– मैक्स वेबर

प्रमुख पुस्तकें

1. प्रोटेस्टेंट नैतिकता और पूंजीवाद की भावना
2. अर्थव्यवस्था और समाज (मरणोपरांत, 1922)
3. विश्व धर्मों की समाजशास्त्र
4. सामान्य आर्थिक इतिहास
5. समाजशास्त्रीय अवधारणाएँ और सामाजिक नीति
6. प्राचीन भारत का धर्म

एक नज़र में संक्षेप

सामाजिक क्रिया की व्याख्या → आदर्श प्रकार → अधिकार के प्रकार → तर्कसंगठितता और आधुनिकता → सामाजिक परिवर्तन की व्याख्या

अर्थ • तर्कसंगठितता • संगठन • आधुनिक समाज

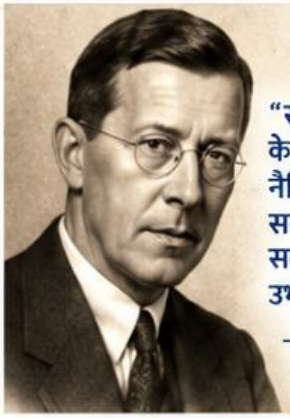

"संकट के समय में नैतिक समस्या सबसे पहले और सबसे अधिक उभरती है।"
– पित्रिम ए. सोरोकिन

पित्रिम ए. सोरोकिन

ऐतिहासिक समाजशास्त्र

सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन

मानव समाज की एक गतिशील दृष्टि

संस्कृति • सामाजिक परिवर्तन • एकीकरण • परार्थवादी समाज

मुख्य तथ्य

पूर्ण नाम	: पित्रिम अलेक्सान्द्रोविच सोरोकिन
जन्म	: 23 जनवरी 1889 (टूर्स्की, रूसी साम्राज्य)
निधन	: 10 फ़रवरी 1968 (विनचेस्टर, अमेरिका)
प्रसिद्ध पहचान	: सामाजिक और सांस्कृतिक गतिशीलता के अग्रणी विद्वान
मुख्य कृतियों	: सोशल एंड कल्चरल डायनामिक्स (1937–41)
दृष्टिकोण	: ऐतिहासिक, तुलनात्मक, व्यापक समाजशास्त्रीय

महत्वपूर्ण सिद्धांत एवं अवधारणाएँ

1 सामाजिक और सांस्कृतिक गतिशीलता

- उनकी प्रमुख कृति: शोशल एंड कल्चरल डायनामिक्स (1937–41)।
- समाज और संस्कृति निरंतर परिवर्तन की अवस्था में रहते हैं।
- परिवर्तन किसी एक रेखीय (सीधी) क्रम में नहीं बल्कि चक्रीय पैटर्न में होता है।
- संस्कृति विभिन्न प्रणालियों की संगठित व्यवस्था है जिनमें विचार, मूल्य, मानदंड और सामाजिक संबंध शामिल हैं।
- ऐतिहासिक समाजशास्त्र को सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन के लंबे समय के चक्रों का अध्ययन करना चाहिए।

समाज और संस्कृति गतिशील हैं, स्थिर नहीं हैं।

"मानव समाज एक स्थिर अवस्था नहीं, बल्कि निरंतर परिवर्तन, संघर्ष और एकता की प्रक्रिया है।"
– पित्रिम ए. सोरोकिन

2 संस्कृति के प्रकार

सोरोकिन ने संस्कृति के चार मूल प्रकारों को विभाजित किया, जिनका प्रमुख रूप से समाजों में मिश्रीत रूप पाया जाता हैं:

आदर्शवादी (आध्यात्मिक) संस्कृति	भावनात्मक (इंद्रियवादी) संस्कृति	संवेदी (मिश्रित) संस्कृति
• आध्यात्मिक वास्तविकताओं पर आधारित	• भौतिक और इंद्रिय सुखों पर आधारित	• आध्यात्मिक और भौतिक तत्वों का मिश्रण
• ईश्वर, अंतिम सत्य और नैतिक मूल्यों पर जोर	• भौतिकवाद और सांसारिक जीवन पर जोर	• संतुलन और सामंजस्य पर बल
• **उदाहरण:** मध्यकालीन यूरोप	• **उदाहरण:** प्राचीन गीस और पुनर्जागरण काल	• **उदाहरण:** आधुनिक पश्चिमी समाज

3 सांस्कृतिक उतार-चढ़ाव और चक्र

- संस्कृतियों एक विशिष्ट पैटर्न में चलती हैं, जो एक प्रकार के चक्र का अनुसरण करती हैं।
- एक संस्कृति में प्राय: एक प्रमुख प्रकार (आदर्शवादी/भावनात्मक/संवेदी) का प्रभुत्व होता है।
- अत्यधिक एक प्रकार की संस्कृति समाज के पतन का कारण बन सकती है।
- गणनात्मक विश्लेषण के माध्यम से ऐतिहासिक चक्रों की व्याख्या की जा सकती है।

अत्यधिकता → पतन → संतुलन → नया चक्र

4 सामाजिक गतिशीलता

- यह समाजशास्त्र के सबसे प्रारंभिक और व्यवस्थित सिद्धांतों में से एक है।
- सामाजिक संरचना के भीतर और उसके बीच व्यक्तियों व समूहों की गतिशीलता का विश्लेषण करने के लिए बहु-आयामी दृष्टिकोण विकसित किया।
- गतिशीलता वर्ग, शक्ति, पेशा और सामाजिक परतों के माध्यम से हो सकती है।
- सामाजिक गतिशीलता समाज के परिवर्तन और स्थिरता दोनों को बढ़ाती है।

गतिशीलता समाज के विकास का इंजन हैं।

"समाज स्थिर नहीं होता; वह गतिशीलता के माध्यम से निरंतर नया रूप लेता है।"
– पित्रिम ए. सोरोकिन

5 परार्थवादी प्रेम (निस्वार्थ प्रेम)

- सोरोकिन के अनुसास परार्थवादी प्रेम समाज के नवीकरण का एक प्रमुख आधार है।
- यह प्रेम सामाजिक और सांस्कृतिक शक्ति है, केवल भावनात्मक अनुभूति नहीं।
- सभी मानवों के प्रति सहानुभूति, सहयोग और कल्याण की भावना को बढ़ावा देता है।
- यह स्वार्थ, हिंसा और संघर्ष को कम कर सकता है और मानवीय एकता को प्रोत्साहित करता है।

"निस्वार्थ प्रेम मानव समाज को एक अधिक रचनात्मक, एकजुट और नैतिक समाज में बदल सकता है।"
– पित्रिम ए. सोरोकिन

6 सामाजिक और सांस्कृतिक संकट

- आधुनिक समाज नैतिक और आध्यात्मिक संकट की दशा में है, जो पश्चिमी सभ्यता के पतन की ओर संकेत करता है।
- समाजों में भौतिकवाद के प्रभुत्व से असंतुलन, अपराध, युद्ध और व्यक्तिवाद बढ़ता है।
- समाधान के लिए आध्यात्मिक पुनर्जागरण आवश्यक है — आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों की ओर वापसी।

"हमारे समय का संकट मुख्य रूप से नैतिक और आध्यात्मिक संकट है।"
– पित्रिम ए. सोरोकिन

7 समाजशास्त्रीय पद्धतियाँ और दृष्टिकोण

- विस्तृत तुलनात्मक और ऐतिहासिक पद्धति का उपयोग किया।
- समाजों के अध्ययन में अंत:विषयी दृष्टिकोण अपनाया — इतिहास, मनोविज्ञान और दर्शनशास्त्र।
- मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों प्रकार के आँकड़ों का विश्लेषण किया।
- व्यापक, बहुस्तरीय और वैज्ञानिक समाजशास्त्र पर बल दिया।

व्यापक और तुलनात्मक विश्लेषण

8 एक समेकित समाज की ओर

- मानवता के लिए एक समेवक्ति समाज का निर्माण उनका आदर्श था।
- सहयोग, परस्पर सहायता और सामाजिक न्याय की आवश्यकता पर बल दिया।
- राष्ट्रों और संस्कृतियों के बीच एकता पर जोर।
- मानवता के व्यापक एकीकरण में विश्वास।

"मानवता का भविष्य एक अधिक एकीकृत और सहयोगात्मक समाज में निहित है।"
– पित्रिम ए. सोरोकिन

मुख्य पुस्तकें

1. सोशल एंड कल्चरल डायनामिक्स (1937–41) – 4 खंडों में (मुख्य कृति)
2. कंटेम्परारी सोशियोलॉजिकल थ्योरीज (समकालीन समाजशास्त्रीय सिद्धांत) (1928)
3. सोशल मोबिलिटी (1927)
4. द मीनिंग एंड रिजोल्यूशन ऑफ अवर टाइम (हमारे समय का अर्थ और समाधान) (1956)
5. पॉवर एंड मॉरेलिटी (1954)
6. सोसाइटी, कल्चर एंड पर्सनालिटी (1967)

एक नज़र में संक्षेप

संस्कृति गतिशील है → संस्कृति के प्रकार → सांस्कृतिक चक्र → सामाजिक गतिशीलता → परार्थवादी प्रेम और एक समेकित समाज

संस्कृति • परिवर्तन • एकीकरण • नैतिक समाज